–: परमात्मना अरिहन्तः बुद्ध चालीसा :–

इस ग्रन्थ का 40 दिनों तक लगातार मनन करने से पाठक सिद्ध अवस्था को प्राप्त करता है ऐसा बुद्धजनों का, सत्य को पाऐं हुए संतो का मत है। और उस अवस्था का नाम है बुद्धत्तव, जागरण, प्रज्ञा, बोध !

जिस किसी ने भी इस ग्रन्थ का पाठ किया, जीवन में इसे धारण किया तथा समाज में इसका वितरण किया उन सभी के मन मे स्वतः ही करुणा का उदय हो गया। आप सभी से अनुरोध है कि नित्य प्रातः इस ग्रन्थ का पाठ करें तथा औरों को भी इस ग्रन्थ को पढनें में सहयोग करें।

योद्धाः – धर्म क्या है?

भगवान – केवल तुम्हारे हद्बय में संसार मात्र के लिए प्रेम।

योद्धाः – क्या हिन्दु, मुस्लिम, सिख, ईसाई, बौद्ध, जैन होना धर्म नही होता?

भगवान – अगर यही धर्म होता तो बुद्ध, महावीर, नानक, कबीर क्या खोज रहें थें? जन्म से धर्म नही मिलता। धर्म ठोकरें खाकर पैदा करना पडता है।

योद्धाः – तो धर्म कैसा होना चाहिए?

भगवान – जीता जागता! जो तुम्हें आज सुखी करें न कि मरने के बाद स्वर्ग पहुचाऐं। क्योंकि मरने के बाद की कल्पना ही पाखण्डवाद है।

योद्धाः – ईश्वर, परमात्मा, खुदा, अल्लाह होता है क्या?

भगवान – हाँ! और यह सभी तुम्हारें ही जीवन के प्रायवाची नाम है। यानी तुम्हारा ही दूसरा नाम अल्लाह है।

योद्धाः – आत्मा का स्वरुप क्या है?

भगवान – आत्मा एक उर्जा स्वरुप है जो समपूर्ण आसत्त्वि में फैली है। उसे अलग वस्तु मानना मूढ़ों ने तुम्हें सिखा दिया हैं।

योद्धाः – आत्मज्ञान क्या है?

parmatmana
the ultimate wisdom

भगवान – केवल स्वयम् को पहचानना, यानी स्वयम् का साक्षात्कार।

योद्धाः – क्या मरने के बाद आत्मा मुक्त होती है?

भगवान – उर्जा को कोई बन्धन ही नही है तो मुक्त काहें को करनी। अगर बिजली की तारों से कहीं आग लग जाए तो क्या बिजली दूषित होगी?

योद्धाः – क्या आत्मा जन्म के समय में आती है तथा मृत्यु के समय में चली जाती है?

भगवान – समुंद्र में मटका डालकर दाऐं-बाऐं चलाकर देखों कि मटका ही चलता है या समुंद्र भी दाऐं-बाऐं चलता है।

योद्धाः – जीवन की उत्पत्ति कैसे हुई?

भगवान – उर्जा एक जीवित शक्ति है और उसी जीवित शक्ति ने जीवन को पैदा किया।

योद्धाः – पाखण्ड़ क्या है?

भगवान – जिसके बारे में तुम्हें पता नही, और वो सभी सोच जो तुमने औरों से ली है उसे सच मान लेना। और उसी पाखण्ड़ अनुसार कृत्य कर स्वयम् को धार्मिक मानकर धर्म की खोज से चूक जाना।

योद्धाः – क्या पुराने सभी शास्त्र गलत है?

भगवान – जो शास्त्र तुम्हारे जीवन के अनुभव से तुममे उपजेगा बस वहीं शास्त्र ठीक है। और तुम्हारे संसार में जो हजारों शास्त्र सभी के धर्मो में है वो सभी तुम्हारे लिए गलत है।

योद्धाः – ध्यान क्या है?

भगवान – मन की निर्विचार अवस्था की दशा और तुम्हारा न हो जाना।

योद्धाः – जागरण क्या है?

भगवान – स्वयम् को पहचान जाना, सत्य को जान लेना।

योद्धाः – बुद्धत्तव क्या है?

भगवान – तुम्हारें मन में से भविष्य की कल्पनाओं का मिट जाना और आज के प्रति प्रेम का जन्म होना, तथा संसार मात्र के प्रति करुणा का उदय होना।

योद्धाः – क्या तीर्थ क्षेत्र में रहने से कुछ लाभ होता है?

भगवान – केवल अपने भीतर रहने से लाभ होता है।

योद्धाः – परमात्मा को, खुदा को कैसे जाना जा सकता है?

भगवान – केवल स्वयम् को जानकर। और जिसने स्वयम् को जान लिया उसने उस विराट को भी पहचान लिया।

parmatmana
the ultimate wisdom

योद्धाः – क्या धार्मिक मान्यताओं के अनुसार सन्यास लेकर पत्नी बच्चें छोड़कर जंगल जाना ठीक नही है?

भगवान – केवल छोडनें वाले को छोडना ही सन्यास है और बाकी सभी कृत्य पाखण्ड़ है। और संसार में से अपनी जिम्मेदारी छोडकर जगंल भागना कोरी मूर्खता है। जो–जो मूर्खताएं धर्म के नाम पर तुम सभी ने संजोई है मैं उसी को तोडनें का प्रयत्न कर रहा हूँ।

योद्धाः – क्या अपने–अपने धर्मो के अनुसार आचरण करना ठीक नही है?

भगवान – इससे तुम दिखावें के धार्मिक बन जाओगें और इसी प्रकार चलने को पाखण्ड़ कहते है। और जो कृत्य तुम्हारें भीतर से उठे और वो तुम्हारा ही हो वही धर्म है। धर्म अपना–अपना नही होता। धर्म केवल प्रेम होता है। प्रेम सभी का एक जैसा होता है।

योद्धाः – योग क्या है?

भगवान – एक योग होता है आध्यात्मिक! जिसका तात्पर्य है तुमसे मिलना। और एक योग होता है संसारिक। जिसका तात्पर्य केवल शारीरिक कसरत करना है।

योद्धाः – क्या खुदा, भगवान, अल्लाह की कोई मूरत होती है?

parmatmana
the ultimate wisdom

भगवान – हाँ ! दुनिया भर में फैली करोड़ों–अरबों मूरत उसी की है लेकिन जब से तुमने परमात्मा को खुदा को दूर सातवें आंसमान पर बिठा दिया तभी से सब उल्टा हो गया है।

योद्धाः – मनुष्य जीवन का लक्ष्य क्या है?

भगवान – केवल जीवन को जीना। और मनुष्य जीवन का ही नहीं हर जीवन का लक्ष्य है कि प्रेम पूर्वक, हंसी–खुशी जीवन को जीया जाए।

योद्धाः – क्या पुण्य करना ठीक नही है?

भगवान – जो तुम करोगें वो पुण्य हो ही नही सकता। तुम रास्ते से हट जाओं फिर जो होगा वो स्वयम् में पुण्य होगा।

योद्धाः – क्या स्वर्ग–नरक होता है?

भगवान – हाँ ! तुम आज सभी नरक में ही तो रहते हो। तभी तो सभी को मरने के बाद स्वर्ग जाने की लालसा रहती है। किसी को बैकुण्ठ जाना है, किसी को जन्नत। लेकिन बुद्ध, महावीर, मौहम्मद, जीजस आदि ने इसी जहां को स्वर्ग बनाकर यहीं अपना स्वर्ग स्थापित कर दिया था। तो बुद्धो के लिए स्वर्ग यहीं है और तुम्हारें लिए नरक यहीं है।

योद्धाः – क्या जाति व्यवस्था ठीक है?

भगवान – हाँ ! गधा एक जाति का है और घोड़ा एक जाति का। तुम जानो तुम्हें कौन सी जाति पसन्द है।

योद्धाः – क्या मनुष्य अछूत होता है?

भगवान – हाँ ! जो दिमागी कोढ़ से ग्रसित है उन्हें छूआ-छूत मानना चाहिए। क्योंकि इससे वो जो 12-15 प्रतिशत लोग जो दिमागी कोढ़ से ग्रसित है वो अगर बचे हुए 85 प्रतिशत को छूऐगें तो वो भी रोगी बन जाएगें।

योद्धाः – क्या कौआ हमारा पितर होता है?

भगवान – हाँ ! चिंता मत करो। तुम जब मरोगें तो कौऐं ही बनोगें क्योंकि पूरा जीवन तुमने धर्म के नाम पर अपने-अपने धर्म स्थलों में बैठकर काँव-काँव ही तो की है।

योद्धाः – क्या काबा-काशी जाने से कोई लाभ नही होता है?

भगवान – होता है। तुम्हारी पिकनिक हो जाती है। लेकिन असल में तुम्हारे ही भीतर काबा-काशी है और वहीं जाने से लाभ होता है।

योद्धाः – क्या ज्योतिष विद्या गलत है?

भगवान – नही! बिल्कुल ठीक है। क्योंकि वो विद्या जिससे हमारे देश में कुछ बेरोजगार लोग पेट भरने में सक्षम है वो गलत कैसे हो सकती है। और तुम्हारें भविष्य के बारे में वो ज्योतिष विद्या बिल्कुल ऐसी ही है जैसे एक अंधा दूसरे अंधे को रात को रास्ता बताऐं।

योद्धाः – क्या पूजा करना ठीक नही है?

parmatmana
the ultimate wisdom

भगवान – तुम अपने माँ–बाप से, पत्नी–बच्चों से संसार में प्रेम करना छोडकर उनकी पूजा करने लग जाओं। बस एक दिन में पता लग जाएगा कि प्रेम करना ठीक है या पूजा करना।

योद्धाः – क्या जन्म मृत्यु विधि के हाथ है?

भगवान – आँखों पर काली पट्टी बांधकर सड़क पार करके देख लो किसके हाथ है।

योद्धाः – क्या भाग्य पूर्व निर्धारित होता है? जिसे ब्रह्मा लिखकर भेजता है?

भगवान – हाँ ! गधों के लिए तो वो लिखकर ही भेजता है कि तुम सकूल नही जा पाओगें और पूरा जीवन दूसरे का बोझा ही ढ़ोओगें। और मनुष्य के लिए कोई ब्रह्मा नही क्योंकि वो स्वयम् अपने भाग्य का विधाता है।

योद्धाः – क्या राम–कृष्ण इस धरती पर हुए?

भगवान – राम–कृष्ण, बुद्ध–महावीर, नानक–कबीर, मौहम्मद –जीजस आदि महापुरुष इस धरती पर हुए या नही इससे तुम्हें कुछ भी लाभ होने वाला नही है। क्योंकि जब यह रहे तब क्या संसार धार्मिक बन पाया था?

योद्धाः – क्या भारत देव भूमि है?

parmatmaa
the ultimate wisdom

भगवान – आज से 2000 वर्ष पूर्व आज से कई गुना बडा भारत था लेकिन तुम 1947 के बाद तो पाकिस्तान को भी देवभूमि नही मानतें। देव एक गुण है जो बुद्धौ के भीतर प्रकट होता है। कोई भी भूमी देव या देवी नहीं होती।

योद्धाः – क्या कभी संसार धार्मिक होगा?

भगवान – नहीं ! संसार कभी धार्मिक नही होता। धर्म मनुष्य के भीतर प्रकट होता है। जिस दिन तुम्हें भी स्वयम् का साक्षात्कार होगा उस समय तुम्हारे भी भीतर से धर्म की खुशबू महकेगी।

योद्धाः – शंकर का मत है कि ब्रह्म सत्य जगत मिथ्या! क्या यह पंक्ति ठीक है?

भगवान – नही ! सही पंक्ति है। **''जगत सत्य ब्रह्म तुम''**

योद्धाः – क्या बड़े भाग्य से मनुष्य जीवन मिलता है?

भगवान – मनुष्य शब्द ही हटा दों। जीवन ही बड़े भाग्य से मिलता है। फिर वो चाहे मनुष्य का हो या पशु-पक्षी का। इसे जप-तप, नमाज, व्रत, अनुष्ठान में न गवाऐं। दिल खोलकर प्रेम पूर्वक इसे जीऐं और औरों को भी जीने दें।

योद्धाः – क्या जीवन दुःख है?

भगवान – बुद्धूओं के लिए तो हाँ ! और प्रबुद्ध के लिए यही जीवन सुख है, उत्सव है, आन्नद है।

parmatmana the ultimate wisdom

योद्धाः – मुक्त कैसे होगें?

भगवान – सारी पुरानी रुढ़िवादी विचारधाराओं को छोड़कर। लेकिन जीते जी। मरने के बाद कोई किसी भी प्रकार की मुक्ति या बंधन का प्रश्न नही होता।

योद्धाः – धर्म या मनुष्य दोनों में से क्या आवश्यक है?

भगवान – किसी भी प्रकार का जीवन। चाहें मनुष्य का हो या पशु–पक्षी का।

योद्धाः – हमारे देश में गरीबी कब समाप्त होगी?

भगवान – जब समाज में करोड़ों जिन्दा कृष्ण, बुद्ध, नानक, कबीर, मौहम्मद, जीजस, अम्बेडकर घूमेंगें।

योद्धाः – सत्य का साक्षात्कार करने की विधि क्या है?

भगवान – दोनों में से एक को मिटा दो ''या तू को या मैं को''

योद्धाः – मोक्ष कैसे मिलेगा?

भगवान – अगर तुम सभी प्रकार की धार्मिक मूढ़ता भरी सोच छोड़ दो तो जीते जी ही मोक्ष पा जाओगें।

योद्धाः – आस्तिक होना अच्छा है या नास्तिक?

भगवान – यकीनन आस्तिक होना ही अच्छा है लेकिन जिनको आजतक तुमने आस्तिक माना है उस प्रकार का मत समझना। वो तो नास्तिक से भी निचली इस्थिती के व्यक्ति है। आस्तिक

parmatmana
the ultimate wisdom

माने वो व्यक्ति जो यह धारणा रखे कि जीवन ने जैसा उसे बनाया वो पूर्णत्या ठीक है। अगर वो मन्दिर-मस्जिद जाकर आरती पूजा कर कुछ बदलवाना चाहता है तो वो नास्तिक है।

योद्धाः – धार्मिक कौन और अधार्मिक कौन?

भगवान – जो संसार मात्र से प्रेम करे वो धार्मिक। और जिसकी सोच मन्दिर-मस्जिद में अटक जाए वो अधार्मिक। लेकिन तुम तो आजतक बिलकुल ही उल्टा मानते आए हों।

योद्धाः – आस्तिक कौन और नास्तिक कौन?

भगवान – जो प्रकृति के चलन को स्वीकारें वो आस्तिक और जो मन्दिर-मस्जिद में जाकर दीया, प्रसाद, मोमबत्ती, अगरबत्ती जलाकर सभी कुछ बदलवाने की इच्छा रखें वो नास्तिक।

योद्धाः – क्या पुराने सारे और सभी धर्मो के शास्त्र गलत है?

भगवान – तुम संसार में आज की जेनरेशन के 10 वर्ष के बच्चें को देखों और तुलना करों उस समय के साथ जब तुम 10 वर्ष के थें। अब बताओं आज का 10 वर्ष का बच्चा अकलमंद या तुम जब 10 वर्ष के थे तब तुम अकलमंद थें। उत्तर आएगा कि आज का बच्चा ज्यादा अकलमंद है। अब सोचों हमसे 5000 वर्ष पहले जो हमसे कम बुद्धिमान लोग थे हम उनकी लिखी हुई पुस्तकों को ठीक मान रहे है। आज बच्चा बड़ा हो गया है। अब नए शास्त्र रचने होगें।

parmatmana the ultimate wisdom

योद्धाः – क्या धर्म जन्म से होता है?

भगवान – नहीं ! जन्म से ही तुम्हारी आंखों पर धर्म की (अंध विश्वास रुपी) पट्टी बांध रखी है। लेकिन कोई-कोई विरला, पागल, दिवाना, मस्ताना गलती से अपनी आंखों पर से पट्टी उतार देता है। और वो ही गलती से धार्मिक हो पाता है।

योद्धाः – क्या इस जगत में फिर कभी कोई पैगम्बर, अवतार, या परमात्मा का पुत्र आएगा?

भगवान – केवल कुछ नासमझ व्यक्ति ही अपने बारे में ऐसी धारणाऐं पालने की कल्पनाऐं करते है। आज से पहले भी जो महापुरुष आए उनमे से किसी ने भी ऐसी घोषणा नही की। हाँ ! उनके जाने के बाद उनके अनुयायियों ने उनके बारे में ऐसे ही मूर्खता पूर्ण वक्तव्य दिए।

योद्धाः – क्या हिन्दू-मुस्लिम, सिख-ईसाई, बोद्ध-जैन होना धार्मिक होना नही होता?

भगवान – अगर ऐसा ही होना धार्मिक होता तो बुद्ध-महावीर जो जगंलों में भटके वो तो बिलकुल सही नही थे। या तो तुम्हारी मान्यताऐं ठीक या बुद्ध-महावीर को जो मिला वो ठीक।

योद्धाः – जैसा हम अब तक करते आऐं है कि पैदा हुए बच्चें को ही हिन्दू-मुस्लिम आदि बना देतें है क्या वो ठीक नही है?

भगवान – **तुम्हारे घर में अब जो बच्चा पैदा हो उसे 25 वर्ष बिना हिन्दू-मुस्लिम, सिख-ईसाई, बोद्ध-जैन बनाऐं बडा करके देख लो। बडा होकर वो तुम्हारें जैसे मूढ़ धार्मिकों पर हसेगां।**

योद्धाः – **अगर पवित्र जीवन भी जिया जाए और मन्दिर-मस्जिद भी जाया जाए तो क्या कुछ हानि है?**

भगवान – **नहीं ! लेकिन पवित्र जीवन जीने के बाद मन्दिर-मस्जिद जाकर करोगें क्या ? धर्म युद्ध की तैयारी? या जेहाद की तैयारी?**

योद्धाः – **हम कैसे माने कि मनुष्य स्वयम् में ही सारा ज्ञान धारण किए हुए है?**

भगवान – **बत्तख के बच्चें को तैरना सिखाना नही पडता। तुम तो फिर भी आदमी के बच्चें हो। जल में पैदा हुई मछलियों को गंगा स्नान के लिए कहीं नही जाना पडता।**

योद्धाः – **मनुष्य अपने ही बंधन क्यों नही खोल पाता?**

भगवान – **यदि मनुष्य स्वयम् का एक बार भी दर्श कर ले तो सारे बंधन क्षण मात्र मे उतार कर फेंक देगा। लेकिन वह दूसरों की ओर देखने की आदत के कारण स्वयम् को कभी भी देख नही पाता।**

parmatmana the ultimate wisdom

योद्धाः – जब यहां धर्मशाला की ही भांति आना–जाना है तो यहां कुछ भी कार्य क्यूं करना? ऐसा संतो ने कहां है?

भगवान – यही दुर्भाग्य है इस देश का कि लोग कुछ और कह गए और तुमने समझ कुछ और लिया। वो कह गए कि लालच मत करो और तुमने मान लिया कि कुछ काम ही मत करों, संसार को सजाओं ही मत क्योंकि यहां से तो चले जाना है।

योद्धाः – क्या दान, दक्षिणा से कुछ लाभ होता है?

भगवान – नही ! अगर तुम दान दक्षिणा के बदले अपने पापों का सौदा करना चाहते हो तो यह मुमकिन नही है। हाँ ! यही काम अगर तुम समाज सेवा करके लोगों को शिक्षित और उनका जीवन उत्तम करने को करते हो तो यह परमात्मा यानी जीवन की ही सेवा है। अच्छा कृत्य है लेकिन धर्म का कुछ भी लेना–देना नही है क्योंकि धर्म को लेना देना केवल मनुष्य से होता है।

योद्धाः – क्या धन का दान देनें से खुदा प्रसन्न होता है?

भगवान – जिस धन को मनुष्यों ने बनाया और तुम्हारें मूढ़ महात्माओं ने जिसकी हमेशा निंदा ही की है वो निंदनीय वस्तु से भगवान प्रसन्न ही कैसे होगा?

योद्धाः – मन्दिर–मस्जिद आदि बनाना क्या धर्म का कार्य नही होता?

भगवान – बिरला ने भारत में अनेकों मन्दिर बनाए, अम्बेडकर ने लोगों को विद्या के मन्दिर में जाने को प्रेरित किया, टाटा ने देश के लिए धन का सृजन किया। स्वयम् अपनी बुद्धि से निणर्य करों कि कौन सा कार्य धर्म का है।

योद्धाः – खुदा को कहां ढूंढ़ें?

भगवान – तुम काबा जाओं या काशी ! खुदा को कहीं न पाओगें। क्योंकि तुम्हारी आंखे ही बंद है। अल्लाह तुम्हारें सामने खुला बिखरा पडा है। ब्रह्म नदी–नालों में चारों तरफ बिखरा पडा है। तुम्हें देखना ही नही आता। रुढिवादी परम्पराओं की पट्टी खोलों अल्लाह सड़कों पर बिखरा दिखेगा।

योद्धाः – मरते समय राम नाम या गंगा जल का क्या लाभ?

भगवान – जो व्यक्ति पूरा जीवन बंधन में रहा तुम सोचते हो मरते वक्त राम नाम से या गंगा जल की 2 बूंद से कोई लाभ होगा? लाभ जीवन में चाहिए था कि मुक्त जी पाता। लेकिन वो तो बंधा रहा अपनी ही परमपराओं से विचारधराओं से। मरने के बाद मुक्ति की धारणा बुद्धों की नही बुद्धूओं की सोच है।

योद्धाः – मोक्ष क्या होता है?

भगवान – वो इस्थिती जिसमें मैं आज जी रहा हूँ।

parmatmana
The Ultimate Wisdom

योद्धाः – हम कृष्ण, बुद्ध, नानक, जीजस, मौहम्मद आदि महापुरुषों की पूजा क्यों करते है?

भगवान – क्योंकि हमारा समाज कृष्ण, बुद्ध, नानक, जीजस, मौहम्मद जैसे महापुरुष दोबारा नही बना पाया। सोचों अगर आज दुनिया में कृष्ण, बुद्ध, नानक, जीजस, मौहम्मद जैसे महापुरुष 100 करोड व्यक्ति जिन्दा घूम रहे होते तो क्या हम इन महापुरुषों के मन्दिर बनातें?

योद्धाः – हमें किस मूर्ति की पूजा करनी चाहिए?

भगवान – स्वयम् की मूर्ति बनवा लो वही परमात्मा की मूर्ति है और बाकी सभी मूर्तियों को बाहर फैंक दों।

योद्धाः – हमें पाप का भय लगता है कि अगर तुम्हारें कहने पर हम अपना पुराना धर्म, मूर्ति या शास्त्र त्याग दें?

भगवान – अपना सभी पुराना मुझें दे जाओं पापों के साथ। मैं उन सभी पापों को भी मुक्त कर दूंगा।

योद्धाः – हमें पूजा स्थल में किसकी तस्वीर लगानी चाहिए?

भगवान – एक आईना लगवाना चाहिए उसी में परमात्मा की तस्वीर दिख जाएगी।

योद्धाः – क्या समाज में अम्बेडकर के मन्दिर बनाने से समाज सुधरेगा?

parmatmana
the ultimate wisdom

भगवान – नहीं। तुम समाज में जिन्दा 5 करोड़ अम्बेडकर पैदा कर दो समाज तत्क्षण सुधर जाएगा।

योद्धाः – क्या मनु संहिता के अनुसार चलना ठीक नही है?

भगवान – नही ! बिल्कुल ही गलत है। पहले का समाज बहुत ही मंद बुद्धि समाज था उस समय लोगों को भी चाबुक के सहारे ठीक रखा जाने का प्रयास किया जाता रहा होगा। लेकिन आज समाज का बौद्धिक स्तर बहुत ऊंचा है। आज उसी स्तर से लोगों को हाँकना बिल्कुल ही गलत होगा।

योद्धाः – ब्राह्मण ही ऊंच-नीच क्यों मानते है, छूआ-छूत क्यों मानते है?

भगवान – ऊंच-नीच या छूआ-छूत को मानने वाला व्यक्ति ही स्वयम् को ब्राह्मण वाद की परम्परा में घोषित कर देता है। हर धर्म में ऐसे लोग मिल जाएगें जो स्वयम् को उच्च तथा दूसरों को निम्न मानते है। वो सभी एक पुरानी परम्परा को जिन्दा रखना चाहते है और उसी सड़ी-गली लाश का नाम है ब्राह्मण वाद। इसको किसी जाति विशेष से नही जोडना चाहिए।

योद्धाः – क्या राम राज दुबारा लाया जाना चाहिए?

भगवान – नहीं ! तुम्हें ज्ञात भी है कि राम राज में क्या व्यवस्थाऐं थी। स्त्रीयां-पुरुष गुलामों की तरह बाजारों में बिकते थे, स्त्रीयों का शोषण होता था। चारों तरफ का समाज

parmatmana the ultimate wisdom

ऊंच–नीच के वर्गीकरण में विभाजित था। इस प्रकार का राम राज हमारे देश के माथें पर एक ध्ब्बा ही लगाऐगा।

योद्धाः –

भगवान –

धर्म मनुष्य के लिए बना था मनुष्य धर्म की बलि के लिए नही।

एक सिद्धान्त तुम्हें हजारों जन्मों से रटाया गया है कि यह जीवन तुम्हें पिछले जन्मों के पापों के कारण मिला है इसमें दुखी रहना नियती है। आज एक नया सिद्धान्त मैं तुम्हें दे रहा हुँ कि यह जीवन प्रकृति द्वारा उपहार स्वरुप तुम्हें गलती से मिल गया है। इससे प्रेम करो और जीओं इसें।

parmatmana
the ultimate wisdom

आज तक तुमने धर्मों को बचाया है और उसकी रक्षा करने को इन्सानों की बलि दी है। मैं इन्सान बचा रहा हुँ तुम्हारें खोखले धर्म मिट रहे है तो मिटने दों। इन्सान जरुरी हैं पाखण्ड़ रुपी विचारधाराऐं नही।

भगवान का अवतार कभी नही होता। हाँ ! भगवत्ता का अवतरण हमेशा होता आया है। आज मेरे भीतर वो फूल खिला है कल तुम्हारें भी भीतर खिलेगा।

मैं समाज की पुरानी सड़ी गली विचार धाराओं को मिटाकर तुम्हें एक नई सोच दे रहा हूँ।

तुम्हें किसी नए धर्म की नहीं केवल स्वयम् के धार्मिक होने की आवश्यक्ता है।

धर्म हिन्दु, मुस्लिम, सिख, ईसाई आदि होना नही केवल स्वयम् को पहचानना होता हैं।

अगर आत्मा सभी को जन्म से ही मिलती तो कुछ भी तो फर्क नही था तुम्हारें और बुद्ध में।

मौत और जीवन का एक ही द्वार है तुम सभी मौत के भय से धार्मिक बने घूमते हों। जीवन क्या है यह तुम्हें अभी तक ज्ञात ही नही है।

मौत तो एक दिन आएगी। कम से कम मौत आने से पहले जीवन का तो स्वाद चख लों।

धार्मिकता की नीवं तो मनुष्य को अपनी ही लाश पर रखनी होती है लेकिन तुम धर्म को हिन्दू–मुस्लिम से ज्यादा कुछ भी नही समझतें।

तुम बने बनाए बुद्ध हो। अगर तुम आज ही सारी मूढ़ताऐं छोड़ दों तो।

मैं एक हाथ से तुम्हारें सारे पाखण्ड़ तोड़ रहा हूँ और दूसरे हाथ से तुम्हारा नव निर्माण कर रहा हूँ।

मैं तुम्हें हिन्दू–मुस्लिम, सिख–ईसाई नही! पूरा–पूरा परमात्मा बना रहा हूँ।

मैं तुम्हें ईश्वर का नही! तुम्हारे स्वयम् का दर्शन करा रहा हूँ।

अपने पैरो की जमीन खोजो इसी का नाम धर्म है।

अगर आज भारत गरीब और दीन–हीन है तो इसके जिम्मेंदार हम स्वयम् है और हमारे धर्म गुरु है।

तुम अपने बच्चों को धन–दौलत नही रीड़ की हड्ड्ी देने की कोशिश करों। और पहले अपने भीतर रीड़ की हड्ड्ी पैदा करों।

कितना अभागा है इंसान! जो ब्रह्म होकर पैदा होता है और हिन्दू–मुस्लिम होकर मर जाता है।

अगर तुम मेरी बातों को होशपूर्वक सुन भी लो तो सम्बोधी क्षण में घट जाएगी।

parmatmana
the ultimate wisdom

कौए–कुत्तें, कीकर–सूकर सभी आन्दित! लेकिन मनुष्य दुःखी? अपनी गलती कब स्वीकारोगें?

मैं धर्मो की और सत्ता की जड़ें खोद रहा हुँ। शायद भारत का भविष्य बदल जाए।

भारत एक ऐसी देव भूमि है जहां करोड़ो की संख्या में दानव धार्मिक वस्त्रों में छुपे रहते है।

जब तक तुम भाग्यवाद के चंगुल से बाहर नही निकलेगें तब तक भारत के भाग्य का सितारा कभी भी आसमां की बुलंदियों को नही छूऐगा।

जिस कटोरे चम्मच को बजाकर बच्चे शोर मचाते है उसी कटोरे डण्ड़े से एक संगीतकार संगीत निकाल लेता है। जीवन में संगीत भरना एक कला है।

parmatmana
the ultimate wisdom

यहां जो भी लिखा है वह मेरा निज का अनुभव है। मेरा मानना है कि जिस प्रकार स्वाद मनुष्य की जीव्हा पर बरसता है उसी प्रकार धर्म भी मनुष्य की आत्मा पर बरसता है। इसलिए अगर सत्य धर्म को जानना है तो धर्मो के नाम पर जो-जो पाखण्ड़ तुम सभी ने ढ़ोया है उसे उतार फैंकों और अपनी आत्मा को बदलने के लिए तैयार हो जाओं।

जिस दिन मेरी यह बातें तुम्हें समझ आने लगेगीं उस दिन तुम्हारा भी जीवन बदल जाएगा। तुम भी क्रांति की मशाल जला लोगे और अपना जीवन परिवर्तित कर लोगे। वरना तो पूरा देश नरक में, दुख में, अपराध बोध में, अज्ञानता में, भूत की सुन्दर यादो में और भविष्य की कल्पनाओं में जी रहा है। 5500 वर्षो का इतिहास है हमारा। फिर भी हम पिछड़े हुए है।

मैं भारत को फिर जवान बना हुआ देखना चाहता हूँ। जहां फिर से अमन हो शांति हो, भाईचारा हों। केवल यही ज्ञान है। और इतना ही धर्म है। और बाकी तुम धर्म के नाम पर जो भी कर रहे हो वो तुम अपने को धोखा ही दे रहे हो।

parmatmana
the ultimate wisdom